हैंडलूम को अनियंत्रित मशीनीकरण से बचाइए

भारत डोगरा

भारत सरकार के हैंडलूम कमिश्नर श्री बी.के. सिन्हा ने 2 वर्ष पहले कहा था कि हैंडलूम से 65 लाख लोगों की आजीविका जुड़ी है और यह कृषि के बाद भारत में रोज़गार का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। मगर हाल के समय में अनेक क्षेत्रों से हथकरघा बुनकरों के बड़ी संख्या में बेरोज़गार होने के समाचार मिल रहे हैं। हालांकि विश्वव्यापी आर्थिक मंदी से उनकी आजीविका के संकट में तेज़ी आई है, पर यह संकट पहले से आरंभ हो गया था।

इस संकट के समाधान के लिए यह समझना ज़रूरी है कि कुछ कार्यों का मशीनीकरण ज़रूरी और उपयोगी हो सकता है, परंतु लाभ-हानि का संतुलित मूल्यांकन किए बिना अंधाधुंध मशीनीकरण को अपनाना उचित नहीं है। यह हैंडलूम के सन्दर्भ में बहुत स्पष्ट नज़र आता है कि इसको अंधाधुंध मशीनीकरण से बचाना क्यों ज़रूरी है।

एक ओर तो यह आजीविका का बहुत प्रमुख स्रोत है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि कपड़ों की अनेक विशेष किस्में व डिज़ाइनें हैं जो हैंडलूम पर ही सबसे अच्छी बनती हैं। आज जब ऊर्जा संरक्षण को इतना ज़रूरी माना जा रहा है, तो हाथ से चलने वाले करघे का महत्व तो और भी बढ़ जाता है।

भारत सरकार ने बहुत पहले हथकरघे के महत्व को समझते हुए मशीनीकृत कपड़े, पॉवरलूम व मिल की अनुचित प्रतिस्पर्धा से हैंडलूम की रक्षा की नीति घोषित की थी, पर कई कारणों से इसको ठीक से लागू नहीं किया जा सका। प्रसिद्ध अर्थ शास्त्री एल.सी.जैन ने एक चर्चित अध्ययन में बताया है कि एक हैंडलूम से चार व्यक्तियों को पूर्णकालीन या अंशकालीन रोज़गार मिलता है तथा एक पॉवरलूम से 6 हैंडलूम विस्थापित होते हैं। इस आधार पर उन्होंने बताया है कि जब 13,86,000 हैंडलूम विस्थापित हुए हैं, तो 55 लाख हैंडलूम जुलाहों का रोज़गार छिन गया है या पहले की अपेक्षा कम हो गया है।

हैंडलूम से जुड़े कई अन्य हुनर हैं। उन पर भी अंधाधुंध मशीनीकरण का प्रतिकूल असर पड़ा है। हाथ की छपाई या कपड़ों की हैंड प्रिंटिंग के हुनर और आजीविका को बचाना भी सरकार ने ज़रूरी माना था व इसलिए इस कार्य के लिए मशीनों के उपयोग की सीमा तय की थी परंतु एल.सी.जैन द्वारा किए गए एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि इस सीमा के अतिक्रमण के कारण 25,000 ऐसे रोज़गार छिन गए जो बचाए जा सकते थे।

हाल के समय में ज़रदोजी व चिकन के हुनर पर भी अंधाधुंध मशीनीकरण का बुरा असर पड़ा है। वाराणसी में कई कारीगरों से बातचीत करने पर पता चला कि चीन से ऐसी मशीनें आयात की गई हैं जिनसे ज़रदोजी कारीगरों का रोज़गार कम हो गया है। कई बुनकरों ने भी कहा कि कंप्यूटर में उनके डिज़ाइन की नकल करने के तौर-तरीकों से उनकी रोज़ी-रोटी छिन रही है।

लखनऊ के चिकन के मशहूर काम के कारीगरों ने भी चीन की मशीनों के कारण अपने रोज़गार पर प्रतिकूल असर की बात बताई। यह लेखक लखनऊ से लगे सीतापुर ज़िले के कुछ गांवों में गया और वहां ज़रदोजी व चिकन का काम करने वाले कारीगरों से मिला। उन सबने यह शिकायत की कि हाल के समय में रोज़गार में कमी आई है।

यह स्थिति असहनीय है, विशेषकर जब सरकार स्वयं हैंडलूम व उससे जुड़ी अनेक दस्तकारियों व हुनरों को बचाने की ज़रूरत को मान चुकी है। अब ज़रूरत इस बात की है कि जो सैद्धांतिक स्तर पर स्वीकार हो चुका है उसे ज़मीनी स्तर पर लागू करने के लिए सक्रियता बढ़ाई जाए। जहां बुनकर व मिले-जुले हुनरमंद सक्रिय हैं, वहां उनके संगठनों का सहयोग इस कार्य के लिए मिल सकता है। हाल में वाराणसी में *बनारस बुनकर समिति, ह्यूमन वेलफेयर एसोशिएसन* व *फाइंड योअर फीट* नामक संस्थाओं ने अंधाधुंध मशीनीकरण के विरुद्ध एक अभियान चलाया है। इस बुनकर संदेश अभियान के अन्तर्गत धीरे-धीरे राज्य के अनेक संगठनों को जोड़कर व्यापक विमर्श करते हुए एक मांग-पत्र तैयार कर उत्तर प्रदेश सरकार व भारत सरकार को सौंपा गया है। ***(स्रोत फीचर्स)***